

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 8a, मूल्य, भाग 1

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

खैर, एक और व्याख्यान में आपका स्वागत है। हम विश्वदृष्टि और मूल्यों पर इस श्रृंखला में हैं, और इसके परिणामस्वरूप, हमें थोड़ा सा डेजा वु मिल रहा है। जब हम उन दोहराव वाले हिस्सों पर आते हैं, तो मैं थोड़ा तेज़ी से आगे बढ़ूंगा।

बेशक, आपको जहाँ भी आप चाहें, वहाँ सुनने का विशेषाधिकार है। आप मुझे जहाँ भी चाहें व्याख्यान सुनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यह GM8 होने जा रहा है।

यह व्याख्यान खास तौर पर मूल्यों पर है। हालाँकि हम विश्वदृष्टि और मूल्यों को पूरी तरह से अलग नहीं कर सकते, लेकिन हम ज़्यादातर मूल्यों के बारे में बात करेंगे। GM8 आपके नोट्स हैं।

ठीक है, और स्लाइड इस विशेष व्याख्यान पर हावी होंगी। ठीक है, चलो शुरू करते हैं। मैं यहाँ इस तरह से बैठने की कोशिश करता हूँ कि आप मुझे थोड़ा देख सकें, लेकिन मैं ज़्यादा दिलचस्पी रखता हूँ कि आप स्क्रीन देखें और आपके पास नोट्स हों।

आप बात करने वाले व्यक्ति को सुन सकते हैं। आपको मिलने की ज़रूरत नहीं है। अगर आप नहीं चाहते तो आपको मुझसे मिलने की ज़रूरत नहीं है।

ठीक है, ठीक है, चलो बाइबिल के मूल्यों के बारे में बात करते हैं। अब, यहाँ फिर से, मैं उन चीज़ों के बारे में जल्दी से बताने जा रहा हूँ जो थोड़ी सी डीजा वू जैसी हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि दोहराव से थकान होगी, और जब आप इन्हें देखेंगे और कहेंगे, मैं ये सब पहले से ही जानता हूँ। ठीक है, उस स्लाइड पर जाएँ जहाँ आप नहीं जानते हैं।

ठीक है, तो मुझे बताइए, मैं इसे और तेज़ी से नहीं करना चाहता। यह रूपांतरित मन मॉडल एक बाइबिल विश्वदृष्टि है जो मूल्यों का निर्माण करती है। आप अपने मूल्यों को अपने विश्वदृष्टि से प्राप्त करते हैं, न कि इसके विपरीत।

लेकिन विश्वदृष्टि पहले आती है। मूल्य दूसरे स्थान पर आते हैं। वे उत्पाद हैं।

रोमियों 12:1 और 2 में यही कहा गया है। आप अपने मन की समीक्षा करके परिवर्तित हो सकते हैं; अब, यदि आप रोमियों की पुस्तक का अध्ययन करें और रोमियों की पुस्तक के प्रवाह में आ जाएँ, तो आप जल्दी ही पा लेंगे कि जब आप अध्याय 12 पर पहुँचते हैं, तो आप रोमियों की सामग्री के अनुप्रयोग में प्रवेश कर रहे हैं।

पॉल इस बारे में धार्मिक था। सिद्धांत, अनुप्रयोग, सिद्धांत, अनुप्रयोग। सिद्धांत हमेशा पहले आता है।

इसके बिना आवेदन वैध नहीं है। वह अध्याय 12 में आवेदन शुरू करता है। और यदि आप अध्याय 12 में आगे पढ़ेंगे, तो आप नैतिकता, आपको क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, इसकी सूची देखेंगे, जो उस परिवर्तित मन के हिस्से के बारे में एक बयान है, जहां वह अध्याय 12 की शुरुआत में इसे शुरू करता है।

ठीक है, तो मैं इसे आपको पढ़कर नहीं सुनाऊंगा। आपने इसे काफी बार देखा है, है न? और इसे दोहराना ज़रूरी है। डेटा आता है।

डेटा सभी के लिए समान है। ग्रिड, विश्वदृष्टि और मूल्यों के ग्रिड में जो होता है, वही दूसरी तरफ अर्थ सामने लाता है। अब, सैद्धांतिक और दार्शनिक रूप से, ब्रह्मांड के बारे में ईश्वर का अर्थ हमारे बिना ही मौजूद है।

तो, हम यहाँ अपने मानवीय अनुभव, डेटा, विश्वदृष्टि और मूल्यों के बारे में बात कर रहे हैं और उन्हें हमारे संदर्भ में अर्थ में संसाधित कर रहे हैं। और हमने इस बारे में काफी बात की है। एक परिवर्तित मन का उत्पाद विश्वदृष्टि है, और विश्वदृष्टि से मूल्यों का उत्पाद भी वहाँ है।

विश्वदृष्टि क्या है? खैर, हमने इस बारे में बात की है। यह एक लेंस है। यह एक लेंस है।

यह एक मानसिक ढांचा या एक वैचारिक प्रणाली है जिसके माध्यम से हम अपनी दुनिया को उस स्थान पर स्थापित करते हैं जहाँ वह है जिसके माध्यम से हम अपनी दुनिया और खुद को देखते हैं। यह पूर्वधारणाएँ और दृढ़ विश्वास हैं जो हमारे जीवन को व्यवस्थित करते हैं। हर कोई, मुझे परवाह नहीं है कि आप किस देश में हैं, आप किस भाषा में मेरी बात सुन रहे हैं।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। आपके पास एक विश्वदृष्टि है। आपके पास एक मानसिक ढांचा है।

आप उस मानसिक ढांचे के संपर्क में हो सकते हैं, यह क्या है, और यह आपको क्या करने, सोचने और करने के लिए प्रेरित करता है। और एक नए ईसाई के रूप में, शायद, आप यह महसूस करना शुरू कर रहे हैं कि आपको उस मानसिक ढांचे को परमेश्वर के वचन के अनुसार समायोजित करने की आवश्यकता है। हम सभी दुनिया में अलग-अलग जगहों पर हैं, अलग-अलग अनुभव हैं, लेकिन हम सभी में एक बात समान है कि हम एक ही तरीके से काम करते हैं।

हम सभी एक विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली से काम करते हैं। आप नास्तिक हो सकते हैं। आप अज्ञेयवादी भी हो सकते हैं।

आप मुसलमान हो सकते हैं। आप यहूदी हो सकते हैं। आप ईसाई हो सकते हैं।

आप कुछ भी हो सकते हैं, चीन, इत्यादि। आपके पास एक विश्वदृष्टि है। आपको यह जानना होगा कि यह क्या है।

आपको यह जानना होगा कि यह आपको काम करने में कैसे मदद करता है। और जब आप मसीह को जान जाते हैं, तो आपको उस विश्वदृष्टि के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता होती

है और यह भी कि परिवर्तित मन आपके विश्वदृष्टि को बाइबिल के मूल्यों के अनुसार समायोजित करने में क्या करने जा रहा है, जिस पर आप काम करने जा रहे हैं। तो, हमारा विश्वदृष्टिकोण हमारे स्वयं की व्याख्या पर कैसे ध्यान केंद्रित करता है? यह हमें यह जानने के संदर्भ में केंद्रित करता है कि हम कौन हैं, हम दुनिया से कैसे संबंधित हैं, और हम दुनिया के बारे में कैसे सोचते हैं।

एक ही डेटा की अलग-अलग व्याख्याएँ वास्तविकता के बारे में क्या संकेत देती हैं? हम जानते हैं कि चर्च में हमारे पास बहुत से अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। हमारे पास रोमन कैथोलिक चर्च है, जो बहुत बड़ा है। हमारे पास एंग्लिकनवाद है।

हमारे पास एपिस्कोपेलियन हैं। हमारे पास प्रेस्बिटेरियन हैं। हमारे पास हज़ारों अलग-अलग तरह के बैपटिस्ट हैं।

मैं आपको एक कहानी सुनाऊंगा चाहे आप इसे चाहें या नहीं। मेरे पास बहुत सारे चित्र नहीं हैं, इसलिए आपको वही सुनना होगा जो मेरे पास है। मैं एक प्रमुख सम्मेलन में पुस्तक बिक्री के लिए कतार में खड़ा था, और प्रसिद्ध कैथोलिक विद्वान रेमंड ब्राउन मेरे ठीक बगल में खड़े थे, और वह जाने के लिए तैयार थे।

हमने बातचीत शुरू की। हमने उनसे रोमन कैथोलिक चर्च में उनके पद के बारे में बात करना शुरू किया और इसी तरह की अन्य बातें भी। वह बाइबिल की पुस्तकों के एक प्रमुख लेखक थे, और उन्होंने हमसे पूछा।

हमने उसे बताया, और उसने कहा कि कैथोलिक बैपटिस्ट की तरह ही हैं। इसमें बहुत सी किस्में हैं। यह उसका एक दिलचस्प बयान था।

वह एक बहुत अच्छे विद्वान थे, और अब उनका निधन हो चुका है। उनमें से कई उस खास युग के थे। चाहे हम सहमत हों या नहीं, उन्होंने पाठ की जांच की, और उनके पास एक निश्चित व्यवस्था थी, रोमन कैथोलिक बाइबिल के विद्वान, जिसके तहत वे पाठ का अनुसरण कर सकते थे, भले ही वे कभी-कभी चर्च से सहमत न हों।

वे बस उस सवाल पर ज़्यादा नहीं बोले। ठीक है, तो हमारे बीच कई तरह के मतभेद हैं। एक ही बाइबल, मतभेद।

खैर, यह ईश्वर के आदेशात्मक कार्य का हिस्सा है, और हम इसका उत्तर नहीं जानते, लेकिन यह हमारी वास्तविकता है, और हमें इससे निपटना है, और इसलिए, यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम खुद को समझें, और हम ईश्वर के वचन को समझें जिसके साथ हम काम कर रहे हैं, और यह उस दुनिया से कैसे संबंधित है जिसमें हम काम करते हैं। ठीक है, तो विश्वदृष्टि के बारे में इतना ही काफी है। हम इस बारे में पहले ही बात कर चुके हैं।

मैं इसे दोहराने नहीं जा रहा हूँ। ऑन्टोलॉजी, एपिस्टेमोलॉजी और मूल्य हमारे विश्वदृष्टिकोण का हिस्सा हैं। ठीक है, तो मुझे बस एक मिनट पीछे जाना है।

इसका मतलब यह है कि हमारे मूल्य इस बात पर आधारित होंगे कि मैं कौन हूँ। मैं एक इंसान हूँ। इसका असर गर्भपात जैसे सवालों पर भी पड़ेगा।

यह ट्रांसजेंडर से जुड़े सवालों को प्रभावित करेगा। यह इच्छामृत्यु से जुड़े सवालों को प्रभावित करेगा। यह जीवन के बहुत से सवालों को प्रभावित करेगा क्योंकि मैं ईश्वर की छवि में हूँ।

मैं ईश्वर द्वारा बनाया गया एक व्यक्ति हूँ, और मुझे यह जानने के लिए बाइबल को देखना होगा कि इसका क्या अर्थ है, और यह कभी-कभी प्रश्न को संबोधित करता है। कई बार ऐसा नहीं होता है, इसलिए आपको उन चीज़ों के बारे में तर्क करना होगा जिनका मैंने अभी उल्लेख किया है। मैं क्या जानता हूँ? यह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ज्ञान हर चीज़ का आधार है, और हमारे पास एक अच्छा ज्ञानमीमांसा आधार होना चाहिए। मुझे क्या करना चाहिए? खैर, फिर से, बाइबल हमें बताती है।

मूल्य क्या हैं? यहाँ, हम एक नई सामग्री शुरू करते हैं, और यह पूछता है कि मूल्य क्या हैं। खैर, एक मूल्य एक बुनियादी व्यक्तिगत विश्वास है। एक विश्वदृष्टि समझ का एक समूह है, लेकिन एक मूल्य एक विश्वास है। यह एक बुनियादी व्यक्तिगत विश्वास है।

आप खुद से यह सवाल पूछ सकते हैं कि बाइबल को समझने के लिए सबसे बुनियादी व्यक्तिगत विश्वास क्या है? ज़्यादातर लोग निर्गमन 3:14 कहते हैं, जब परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं वही हूँ जो मैं हूँ। इब्रानियों का कहना है कि जब तक आप यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर मौजूद है, आप कहीं नहीं जा सकते। दूसरे शब्दों में, हमारे पास सबसे बुनियादी मूल्य यह है कि एक परमेश्वर है और परमेश्वर ने हमसे संवाद करने के लिए चुना है, कि बाइबल उस संचार का उत्पाद है, कि परमेश्वर ने अपने बेटे को हमारा उद्धारक बनने के लिए भेजा है, और कि उसका बेटा किसी दिन फिर से वापस आएगा और दुनिया को बताएगा कि परमेश्वर ने हमारे संसार में क्या संदेश दिया है।

इसलिए, मूल्य विश्वदृष्टि के बारे में व्यक्तिगत विश्वास हैं जिन्हें हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। मूल्य हमारे विश्वदृष्टि से प्राप्त होते हैं। वे पहले नहीं आते हैं।

वे एक उत्पाद हैं। मूल्य उस विश्वदृष्टि का उत्पाद हैं जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। जिन मूल्यों को हम पहचानते हैं और लागू करते हैं, वे हमारे विचारों और कार्यों के बारे में हमारे निर्णयों को निर्देशित करते हैं।

यह पैसे के मामले में बहुत मायने रखता है। मैंने पढ़ाते समय बहुत से छात्रों को देखा, जो अपने पैसे को अपनी जीवनशैली के हिसाब से समायोजित करना चाहते थे। जैसे कि वे बाहर जाकर नई कार खरीदना चाहते थे।

खैर, अंदाज़ा लगाइए क्या हुआ? उन्हें ज़्यादा काम करना पड़ा, इसलिए उन्हें एक क्लास छोड़नी पड़ी। स्कूल से निकलने और फिर चीज़ें पाने पर ध्यान देने के बजाय, वे अभी चीज़ें पाने के लिए बहुत ज़्यादा बेचैन थे। वे खुद को वित्तीय समस्याओं में फँसाने लगे।

फिर, वे स्कूल जाने के लिए पैसे उधार लेना चाहते हैं, और इससे उन्हें और भी बड़ी समस्याएँ हो जाती हैं। जीवन में कुछ खास समय आने पर हमें अपनी बुनियादी व्यक्तिगत मान्यताओं को बदलना पड़ता है। छात्र गरीब होते हैं।

छात्र स्टेक के बजाय बोलोग्रा खाते हैं। छात्र बाहर जाकर टूना का एक टुकड़ा खरीदने के बजाय डिब्बाबंद टूना खाते हैं। क्यों? हम अपने जीवन में एक निश्चित बिंदु पर त्याग करते हैं ताकि हम खुद को उस काम को करने के लिए तैयार कर सकें जिसके लिए हमें लगता है कि भगवान ने हमें बुलाया है।

अब, ऐसे कई तरह के अनुप्रयोग हैं जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से ला सकते हैं, लेकिन आपके मूल्य, आप कैसे कार्य करते हैं, आप कैसे रहते हैं, आप क्या खरीदते हैं, और आप अन्य लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, ये सब आपके मूल्यों की खिड़कियाँ हैं। और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है जिसके बारे में जागरूक होना चाहिए। और इसलिए हमारा मूल व्यक्तिगत विश्वास यह है कि ईश्वर मौजूद है, कि ईश्वर ने संचार किया है।

इसके बारे में कई बातें हैं जो हमारे मूल्यों को हमारे विश्वदृष्टिकोण से प्राप्त करती हैं, कि संचार बाइबल है, और हमें इसे समझने की आवश्यकता है। जिन मूल्यों को हम पहचानते हैं और लागू करते हैं, वे हमारे विचारों और कार्यों के बारे में हमारे निर्णयों को निर्देशित करते हैं। और वे लगातार काम कर रहे हैं।

आप शायद इस बारे में न सोचें। आप कह सकते हैं, ठीक है, मुझे नहीं पता कि मेरे मूल्य क्या हैं। अच्छा, बैठो और अपने आप से पूछो, मैं किस चीज़ को महत्व देता हूँ? क्या तुम्हें खुश करता है? कई साल पहले लैरी क्राविट्ज़ ने मुझसे यह सवाल पूछा था।

हम ग्रेस कॉलेज और सेमिनरी में दीक्षांत समारोह की कतार में खड़े थे, और उन्होंने मुझसे पूछा, आपको क्या खुशी देता है? आप जानते हैं, यह एक सरल प्रश्न जैसा लगता है। नहीं, यह सरल नहीं है। वह क्या है जो वास्तव में आपको खुशी देता है? और आप कहेंगे, अच्छा, एक अच्छा भोजन मुझे खुश करता है।

खैर, यह अच्छा है, लेकिन यह बहुत गंभीर नहीं है। एक अच्छा बैजो मुझे खुश करता है। यह गंभीर है, लेकिन यह पर्याप्त गंभीर नहीं है।

परिणामस्वरूप, हम जिन मूल्यों को पहचानते हैं और लागू करते हैं, वे जीवन में हमारे द्वारा किए जाने वाले हर काम को प्रभावित करते हैं। और अगर हम नहीं जानते कि हमारे मूल्य हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों के साथ काम कर रहे हैं, तो हम यह नहीं जानते कि हम कौन हैं। खुद को जानें।

जानें कि आप कैसे काम कर रहे हैं। मूल्य हमारी मान्यताओं की पूरी श्रृंखला को कवर करते हैं, गैर-परक्राम्य नैतिक मान्यताओं से लेकर हमारी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं तक। मैं इसे स्पष्ट करने जा रहा हूँ।

आप देखिए, मूल्यों ने ही टिंडेल और विक्लिफ जैसे लोगों और अन्य लोगों को बाइबल को लोगों की भाषा में बदलने के लिए अपनी जान देने की अनुमति दी और उनका नेतृत्व किया ताकि लोग इसे समझ सकें। बाइबल को लैटिन में बंद कर दिया गया था, जिसे बहुत से लोग नहीं जानते थे, पश्चिमी दुनिया में। और इन लोगों ने अपनी जान की बाजी लगाकर, उनमें से कुछ को खोदकर निकाल लिया और उन्हें सूली पर जला दिया क्योंकि उन्हें ऐसा करने का मौका पहले नहीं मिला था।

इसलिए, आपके मूल्य कभी-कभी आपको ऐसे विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करेंगे जो आपके लिए जोखिम भरे हो सकते हैं। हो सकता है कि आप उतना पैसा न कमा पाएं जितना आप कमा सकते थे क्योंकि आपके मूल्य आपको अलग नौकरी की ओर ले जाते हैं। वे लगातार काम पर रहते हैं, और आपको उनके संपर्क में रहने की ज़रूरत है।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको यह जानना होगा कि वे सही हैं। आप ऐसा कोई गलत मूल्य नहीं रखना चाहेंगे जो आपको गलत निष्कर्ष पर ले जाए। ठीक है, हम आगे बात करेंगे।

तो, मूल्य क्या हैं? अब, आइए मूल्यों के प्रकारों के बारे में बात करते हैं। अब, आपके लिए कुछ नए शब्द हैं। कर्तव्यवाद बनाम परिणामवाद।

कर्तव्य-सिद्ध मूल्य सृजित मूल्य हैं। वे ईश्वर से आते हैं। वे उसकी सृजित दुनिया का हिस्सा हैं, और उन पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

परिणामवाद उस क्षेत्र में आता है जिसे हम व्यावहारिकता कहते हैं, और वे चीजें अधिक बातचीत योग्य हैं। और लोग उस क्षेत्र में असहमत होने पर भी असहमत होंगे। आइए देखें कि यह कैसे काम करता है।

आंतरिक मूल्य। नैतिक मूल्य आंतरिक हैं। वे हमारे अंदर हैं।

वे स्वाभाविक रूप से अच्छे हैं, अपने आप में अच्छे हैं। वे व्युत्पन्न नहीं हैं। वे अंततः ईश्वर से आते हैं।

वे एक अंतिम या अंतिम मूल्य हैं। वे वोट होंगे जो आपको एक दिशा या दूसरी दिशा में ले जाएंगे। वे अन्य सभी मूल्यों को व्यवस्थित करते हैं।

यह वही है जो हमें करना चाहिए। यदि आपको पादरी बनने के लिए अपनी डिग्री प्राप्त करने के लिए छात्र होना चाहिए, तो स्पष्ट रूप से, आपको ऐसा करने के लिए उस डिग्री की आवश्यकता है। हमारे पास मंत्रालय में पर्याप्त संख्या में डमी हैं।

कृपया, कृपया इस पर टिके रहें। लेकिन आपके अंतर्निहित मूल्य यह हैं कि आपको इस तरह से भगवान की सेवा करने के लिए बुलाया गया है, और आपको ऐसे मूल्य रखने होंगे जिनका मतलब है कि आप इसे हासिल करने के लिए त्याग करने जा रहे हैं। आप स्कूल से निकलने की कोशिश

करेंगे, जितना हो सके उतना अपना खर्च उठाएँगे, और जितना हो सके उतना कम ऋण लेंगे ताकि आप पर यह बोझ न पड़े।

बहुत से लोग ऐसे हैं जो एडमिशन फील्ड में नहीं जा पाते क्योंकि उन पर बहुत ज़्यादा पैसे का कर्ज है। वे उन लोन को चुकाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं कमा पाते। नतीजतन, हमारे मूल्य हमें अच्छे और बुरे की ओर ले जाते हैं।

हमारे मूल्य अक्सर हमें त्याग करने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि हम अधिक अच्छा हासिल कर सकें। लेकिन हमें ऐसा करना चाहिए। जीवन की कला कठिन है।

मैं थोड़ा आदर्शवादी हूँ, और दुनिया में आदर्शवादियों की सराहना नहीं की जाती क्योंकि लोग बस कुछ करवाना चाहते हैं। मैं इसके बारे में सोचना चाहता हूँ। मैं आपको चर्चों में इस संबंध में की गई कुछ यात्राओं के बारे में नहीं बताऊंगा।

सवाल मत पूछो। सवाल मत पूछो। बस करो।

खैर, ज़रूर, मैं ऐसा करता हूँ। यहाँ सवाल है। खैर, नहीं, हम यह सुनना नहीं चाहते।

चाहिए। चाहिए होना हमारा मार्गदर्शन करने के मूल में है, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे मूल्य सही हैं या हमारा चाहिए गलत हो सकता है। हमें चाहिए के बजाय नहीं चाहिए।

इसलिए, हमारे पास सभी तरह के कारणों से अंतर्निहित मूल्य हैं। हमें ये मूल्य अपने माता-पिता से मिलते हैं। हमें ये मूल्य अपने दोस्तों से मिलते हैं।

हमें ये सभी जगह से मिलते हैं। हमें उन मूल्यों के बारे में पूछना और उनका मूल्यांकन करना होता है कि उन्हें होना चाहिए या नहीं। मेरे पिताजी कहा करते थे कि एक ही पंख वाले पक्षी एक साथ रहते हैं।

जब भी उसे लगता कि मैं गलत लोगों के साथ घूम रहा हूँ, तो वह हमेशा यही कहता था। मैं ईसाई नहीं था, इसलिए मैं गलत लोगों के साथ काफी घूमता था। मैं तब तक ईसाई नहीं बना जब तक मैं एक साल नौसेना में नहीं रहा।

और उसके पास एक छोटा सा वाक्य था, एक ही पंख के पक्षी एक साथ झुंड में रहते हैं। वह मुझे बता रहा था कि तुम्हें वह नहीं करना चाहिए जो वे करते हैं। लेकिन उस समय मेरे जीवन में ज़्यादा कुछ नहीं था।

तो यह कर्तव्य-परायणता है। कर्तव्य-परायणता आंतरिक है। यह जीवन का उद्देश्य है।

बाह्य वह है जिसे हम परिणामवाद कहते हैं। अच्छा। यह अपने आप में अच्छा नहीं है, बल्कि यह जो हासिल करता है उसमें अच्छा है।

हम उम्मीद कर सकते हैं कि यह आंतरिक मूल्यों से व्युत्पन्न है और इसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए। और यही वह है जो हमें करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें यह करना चाहिए।

इस पर बहस नहीं हो सकती। हमें क्या करना चाहिए, इस बारे में हमें थोड़ा और सोचना होगा। यह अच्छा है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि यह ईश्वरीय हो।

दिन के अंत में यह अच्छा परिणाम दे सकता है। मैं आपको एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ। मान लीजिए आपको खाना परोसा गया है और किसी ने आपको अच्छा खाना देने के लिए अपनी पूरी मेहनत की है।

और फिर भी, मेरे जीवन में एक ऐसा कार्यक्रम हुआ जहाँ मुझे एक युवा जोड़े ने सेवा दी, और वे बहुत घबराए हुए थे। मैं चर्च में अतिथि वक्ता था और वे समझ नहीं पाए। मैं बस एक सामान्य व्यक्ति था।

मुझे उनके लिए बैजो की धुन बजानी चाहिए थी। शायद वे शांत हो जाते। लेकिन मुझे लगता है कि वे मुझे सामान्य नहीं मानते थे।

और उसने अपना मीटलोफ नहीं बनाया। और उसका मीटलोफ लगभग कच्चा था। अब, आप कच्चा हैमबर्गर नहीं खाते।

तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं क्या करने जा रहा हूँ? मैं यहाँ टेबल पर हूँ, और मुझे मीटलोफ़ का टुकड़ा और उसके साथ खाने वाली चीज़ें परोसी जाती हैं। और मीटलोफ़ वहाँ कच्चा पड़ा है, बिल्कुल कच्चा।

किनारों के आसपास थोड़ा सा। यह हो गया। तो, मैं क्या करूँ? किनारों के आसपास जाओ और उसे बताओ कि तुमने यहाँ बहुत बुरा काम किया है।

तुमने खाना नहीं बनाया। लेकिन यह तो बदतमीजी होगी, है न? अपने बाहरी मूल्य के कारण, मैं उसे शर्मिंदगी से बचाना चाहता हूँ। मैं उस बेचारी को शर्मिंदा नहीं करना चाहता।

उसने बहुत मेहनत की है। वे पहले से ही बिना किसी कारण के मौत से डरे हुए हैं। तो, आप क्या करते हैं? आप व्यावहारिक काम करते हैं।

आप जितना खा सकते हैं, उतना खाएँ। और अगर आप उस बढ़िया खाने के लिए शुक्रिया कहते हैं तो क्या आप झूठ बोल रहे हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि हर झूठ धोखा देने का इरादा रखता है, लेकिन हर धोखा झूठ नहीं होता।

जोशुआ और सैन्य रणनीति झूठ नहीं बोल रहे थे। वे झूठ को नैतिक बुराई कहने के दोषी नहीं थे। हर झूठ में धोखे का तत्व होता है।

लेकिन हर धोखा जरूरी नहीं कि झूठ हो, नैतिक झूठ हो। अब, यह सोचना काफी कठिन नैतिकता की बात है। लेकिन सच तो यह है कि हमारे पास बहुत सारे बाहरी मूल्य हैं।

हम वो काम करते हैं जो हम नहीं करना चाहते। हम वो काम करते हैं जो हमें लगता है कि करना सबसे अच्छा नहीं है। हमें उसे खाना बनाना सिखाना चाहिए।

लेकिन अगर आपमें थोड़ी भी समझदारी है तो आप जीवन में ऐसा नहीं करते। तो, आपको क्या करना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए? मुझे उस महिला को शांत रहने में मदद करने की कोशिश करनी चाहिए, यह सोचने के लिए कि मुझे उसका दिया हुआ खाना बहुत पसंद आया, और मुझे वह बहुत पसंद आया। आप हमेशा चीजों के बारे में सीधे, बुरे या ईमानदार नहीं हो सकते।

हम कई मामलों में खुद को सीमित कर लेते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि अंत अच्छा हो। अब, यह मुश्किल हो जाता है क्योंकि अंत साधन का औचित्य नहीं है। यह एक बुरी बात हो सकती है।

इसका इस्तेमाल कई तरीकों से किया गया है। लेकिन आपके पास आंतरिक मूल्य हैं, जो आपको करना चाहिए। आपके पास बाह्य मूल्य हैं, और वे इस बारे में थोड़ा भिन्न हो सकते हैं कि आपको क्या करना चाहिए।

होलिंगर की ग्रंथ सूची को देखिए। नैतिकता के बारे में सोचना शुरू करने के लिए यह एक बेहतरीन किताब है। मूल्यों के उदाहरण, ठीक है? वे तार्किक मूल्य नहीं हैं।

वे क्या हैं? वे अंतर्निहित हैं। वे वही हैं जो आपको करना चाहिए। ईसाइयों के लिए, 'करना चाहिए' का स्रोत ईश्वर और ईश्वर का वचन है।

परमेश्वर के वचन की अनिवार्यताएँ, संदर्भ में, परमेश्वर के चरित्र के निहितार्थ। पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। परमेश्वर के समान बनो।

आप इस बात के प्रतिनिधि हैं कि कथा किस तरह ईश्वर के कार्यों को प्रस्तुत करती है। इसमें अंतर्निहित मूल्य हैं।

भगवान वही करते हैं जो सही है, तब भी जब हम इसे देखते हैं और कहते हैं, ठीक है, मुझे इस बारे में यकीन नहीं है। लेकिन भगवान सृष्टि का आदेश तब देते हैं जब वह स्पष्ट रूप से ऐसा करते हैं, एक उचित तरीके से, भले ही हम उचित तरीके से असहमत हों। परिणामवाद, बाहरी टुकड़े।

यह उद्देश्यपरक है। इसका मतलब है कि हमेशा एक अंत होता है। यह किसी कार्य के अंतिम परिणाम पर ध्यान केंद्रित करता है।

यह दावा किया जा सकता है कि अंत साधन को उचित ठहराता है जैसे कि मेरा अंत महिला को यह बताना था कि मैंने उसका भोजन पसंद किया। यह उसकी रक्षा करना, उसका ख्याल रखना

और असभ्य न होना उचित ठहराता है, ठीक है? साधन उस अंत को उचित ठहराते हैं। लेकिन आपको इसके साथ बहुत सावधान रहना होगा।

आपको अंत का कारण बताना होगा, साधनों को उचित ठहराना होगा। क्योंकि, सिद्धांत रूप में, यह तरीका नहीं है। लेकिन कुछ परिणामी नैतिकताएँ हैं जिनसे आपको निपटना होगा।

उपयोगितावाद बहुसंख्यकों के लिए सबसे बड़ा लाभ है। क्या बहुसंख्यक हमेशा सही होते हैं? आप जानते हैं, चर्च के इतिहास में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यकों के बारे में बहुत बहस होती है। कुछ लोग कहते हैं कि बहुसंख्यकों ने अल्पसंख्यकों को दबा दिया।

मेरा मतलब है, आपको सभी तरह के विद्वान पहली पाँच शताब्दियों में घटित मुद्दों और चर्च के बहुमत ने इसे कैसे नियंत्रित किया, इस पर बहस करते हुए मिलेंगे। खैर, यह एक और सवाल है जिसे किसी और समय के लिए पूछा जाएगा। लेकिन उपयोगितावाद, बहुमत के लिए सबसे बड़ा लाभ, शायद सबसे अच्छी बात न हो।

यह शायद सबसे अच्छी बात न हो। आप अपने चर्च में कई बार लोगों को खो सकते हैं क्योंकि आप बहुमत को खुश नहीं करना चाहते। सापेक्षवाद, कोई निरपेक्षता नहीं।

अब, सापेक्षवाद बुरा है क्योंकि निरपेक्षताएँ बाइबल का बहुत बड़ा हिस्सा हैं। कोई निरपेक्षता नहीं। सांस्कृतिक सापेक्षवाद।

व्यक्तिवाद नैतिक व्यक्तिपरकता की ओर ले जाता है। जो आपके लिए सही है, वही सही है। इसलिए, सापेक्षवाद को खत्म कर दें।

यह परिणामकारी है। यह बाह्य है, लेकिन यह ईसाई और बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण में बिल्कुल भी काम नहीं करेगा। कुछ निरपेक्षताएँ हैं, और वहाँ बहुत कुछ है जिससे हमें निपटना है।

तो, मैंने इन चीज़ों के बारे में बात करके आपको नैतिकता पर एक सेमेस्टर का तीसरा हिस्सा दे दिया है। तो जाहिर है, मैं सरल हो रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि आप बड़े विचार प्राप्त कर सकते हैं। और यही आपको करने की ज़रूरत है।

और मुझे उम्मीद है कि आप इतने उत्सुक होंगे कि आप उससे आगे बढ़कर दूसरी चीज़ों पर चले जाएँगे। स्लाइड नंबर 11. तकनीकी शब्दों को लेकर इतना हंगामा क्यों? डीऑन्टोलॉजिकल, परिणामवाद, और ऐसी ही अन्य बातें।

क्योंकि ये शब्द मूल्यों की प्रकृति को उजागर करते हैं, वे किसी व्यक्ति के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को उजागर करते हैं। कुछ शब्दावली सीखने में कोई बुराई नहीं है।

यदि आप इंजीनियर हैं, तो आपको शब्दावली सीखनी होगी। यदि आप गणित के शिक्षक हैं, तो आपको शब्दावली सीखनी होगी। यदि आप अंग्रेजी पढ़ाते हैं, तो आपको शब्दावली सीखनी होगी।

अगर आप मशीनों की मरम्मत करते हैं, तो आपको शब्दावली सीखनी होगी। हर किसी को शब्दावली सीखनी होती है। और फिर भी, कभी-कभी ईसाई ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे हम उनसे किसी शब्द की परिभाषा सीखने के लिए कहते हैं, तो हम उन पर दबाव डाल रहे हैं।

और अगर हम कहें कि हम आपको एक शब्दकोश लाएंगे तो हम असभ्य होंगे। अरे, अगर आप एक शिक्षित व्यक्ति बनने जा रहे हैं, तो एक शब्दकोश लें, एक बाइबिल शब्दकोश लें, साथ ही एक नियमित शब्दकोश भी लें। तो इतना हंगामा किस बात का है? शब्द मूल्यों की प्रकृति को उजागर करते हैं।

वे हमारे विश्वदृष्टिकोण और हमारे मूल्यों को उजागर करते हैं। हमें इन शब्दों को जानना होगा। और आम तौर पर, हमें उन्हें दूसरों को समझाना होगा।

आप उन्हें सीखते हैं, आप उन्हें दूसरों को देते हैं, कोई और उन्हें सीखता है, और वे उन्हें दूसरों को देते हैं। एक तकनीकी शब्द चीजों के पूरे क्षेत्र को कवर कर सकता है। ऑन्टोलॉजी शब्द एक क्षेत्र है।

ज्ञानमीमांसा शब्द एक क्षेत्र है। मूल्यमीमांसा एक क्षेत्र है। परिणामवाद एक क्षेत्र है।

डेऑन्टोलॉजिकल एक क्षेत्र है। लेकिन आप इस क्षेत्र के बारे में शब्द के साथ बात कर सकते हैं और आपको क्षेत्र की व्याख्या करने की ज़रूरत नहीं है। और आपके पास उस श्रेणी में बहुत सारे बाइबिल शब्द भी हैं।

पॉल ने उन्हें औचित्य के क्षेत्र को सक्रिय करने के लिए इस्तेमाल किया। जब वह इसका उल्लेख करता है तो वह हमेशा इसे परिभाषित नहीं करता है। वह उम्मीद करता है कि उसके श्रोताओं को यह समझ हो कि वे इस शब्द को क्या कहते हैं।

ठीक है, तो तकनीकी शब्दों को लेकर इतनी परेशानी क्यों? वे मायने रखते हैं। वे आपके विश्वदृष्टिकोण को उजागर करते हैं क्योंकि हर कोई इनमें से किसी एक श्रेणी में निर्णय लेता है और लोग अपने निर्णयों के अनुसार ही निर्णय लेते हैं। आप या तो ज़्यादातर 'चाहिए' क्षेत्र में काम कर रहे हैं या फिर आप ज़्यादातर 'व्यावहारिक परिणाम' क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

अब, दोनों डोमेन की वैधता है, जैसा कि मैंने पहले ही अलग-अलग तरीकों से दर्शाया है। और इसलिए आपको इसके माध्यम से काम करना होगा। यह एक पल की सीख नहीं है।

यह सीखना है कि यह मौजूद है और आपको इसके बारे में सोचना चाहिए। इसलिए, हर कोई इन दोनों श्रेणियों में निर्णय लेता है। आपको यह जानना होगा कि आप कहाँ हैं और अपने निर्णयों में आप कहाँ स्थित हैं क्योंकि यह आपके निर्णयों को शक्ति देता है या यह आपके निर्णयों को बातचीत और बातचीत देता है।

हमें न केवल सोचना चाहिए बल्कि यह भी जानना चाहिए कि हम कैसे सोचते हैं। खैर, यह एक बड़ी बात है। सोचना एक बात है।

यह जानना कि हम कैसे सोच रहे हैं। चेतना होना, याद रखें कि यह हमारे लक्ष्य का हिस्सा है, हमारी सोच के बारे में सचेत विचार-विमर्श और आलोचनात्मक रूप से सोचना, क्योंकि बिना जांचे-परखे जीवन जीने लायक नहीं है, और एक मसीही को लगातार खुद की जांच करने की ज़रूरत है। यह कोई खेल का मैदान नहीं है।

यह कार्य का एक बहुत ही गंभीर क्षेत्र है। मूल्य। आइए मूल्यों के बीच अंतर के बारे में सोचें।

इन वाक्यांशों के बारे में सोचिए। अच्छा खाना, अच्छा कुत्ता, अच्छा इंसान, अच्छा दोस्त, अच्छा भगवान। और यह कोई विस्मयादिबोधक शब्द नहीं है।

खैर, आप जानते हैं, एक अच्छे भगवान और एक अच्छे कुत्ते के बीच बहुत अंतर होता है। अच्छा खाना, अच्छा इंसान, अच्छा दोस्त। इनमें से हर एक के साथ मूल्य जुड़े होते हैं।

मुझे कुत्ते बहुत पसंद हैं। मैंने इन वीडियो के दौरान अपने छोटे कुत्ते को अपने ऑफिस में अलग रखा है क्योंकि वह मेरी आपसे बात करने में बाधा बनेगा। एक अच्छा इंसान।

एक अच्छा इंसान क्या होता है? खैर, मैं अपने पिता की बात पर वापस आता हूँ। उन्होंने मुझे बताया कि वह एक अच्छे इंसान या बुद्धिमान व्यक्ति हैं। क्यों? क्योंकि मेरे पिता उनसे सहमत थे।

और आप जानते हैं, आपकी बहुत सी दोस्ती उन लोगों पर आधारित होती है जिन्हें आप पसंद करते हैं। क्या आप उन लोगों से दोस्ती करने की कोशिश करते हैं जिन्हें आप पसंद नहीं करते? क्या आप उन्हें समझने की कोशिश करते हैं? हाँ, यह आसान नहीं है। मुझे इससे परेशानी होती है।

मुझे वे लोग पसंद हैं जो मुझे पसंद हैं। मुझे उन लोगों को चुनौती देना पसंद है जो मुझे पसंद नहीं हैं। और कभी-कभी वे मुझे पसंद नहीं करते।

लेकिन आप देखिए, सच तो यह है कि अच्छाई बहुत से क्षेत्रों में काम आती है। और वे सभी किसी भी तरह से समान नहीं हैं। क्या ईश्वर अच्छा है? खैर, बहुत से लोग हैं जो बुराई की समस्या से निपटते हैं, जो अपने आप में एक अनुशासन है, जो कहेंगे, ठीक है, ईश्वर अच्छा नहीं है।

अगर वह अच्छा होता, तो वह जर्मन शासन के दौरान 6 मिलियन यहूदियों की मौत की अनुमति नहीं देता। और यह सब जर्मनों का मामला नहीं है। यह एक कट्टरपंथी समूह था जिसने देश पर कब्ज़ा कर लिया था।

जर्मन लोग तब से इसी के साथ जी रहे हैं। और यह उनके लिए बहुत मुश्किल रहा है। और इसलिए, आपको मूल्यों का मार्गदर्शन करना होगा।

आपको इस सवाल का जवाब देने में सक्षम होना चाहिए कि क्या अच्छा है। और शास्त्र वापस आकर आपको इसका कुछ जवाब देंगे क्योंकि आपका विश्वदृष्टिकोण यह निर्धारित करता है कि क्या अच्छा है।

क्या पोर्श अच्छी है? क्या यह आपके जीवन का लक्ष्य है? या क्या आप उस शेवरले के साथ चल सकते हैं और अपने शेवरले जीवन को भी उसी तरह पूरा कर सकते हैं? अगर आपके पास खर्च करने लायक पैसे हैं और आपने अपने सभी दायित्वों, दान आदि का ध्यान रखा है, तो पोर्श रखना गलत नहीं है। और इसलिए, देखिए, सोचने के लिए बहुत कुछ है। सबसे बड़ा मूल्य क्या है जो एक आस्तिक का मार्गदर्शन करता है? शब्द है प्रेम।

अब, मैं आपको बताना चाहता हूँ, और मैं बिना किसी विरोधाभास के डर के आपको बताने जा रहा हूँ, कि आपके पास प्यार शब्द के बारे में एक ऐसा दृष्टिकोण है जो बहुत छोटा है। सबसे पहले, प्यार एक दिल नहीं है जिसे आप एक लिफाफे पर रखते हैं जिसे आप किसी मित्र को भेज रहे हैं। और वह प्यार का संचार करता है।

प्यार का मतलब माँ का आपको गले लगाना नहीं है। यह सच है, लेकिन यह उस तरह का प्यार नहीं है जिसकी मैं बात कर रहा हूँ। प्यार चॉकलेट, बादाम आइसक्रीम नहीं है।

मुझे यह पसंद है। यह वाकई बहुत बढ़िया है। इसमें चॉकलेट, बादाम और नारियल है।

यह वाकई बहुत बढ़िया है। ठीक है। देखिए, प्यार बहुत सारे क्षेत्रों को कवर करता है।

जब आप यह सवाल पूछते हैं कि बाइबल में वर्णित प्रेम क्या है? आप ऐसे क्षेत्र में आ रहे हैं जिसे मैं जानता हूँ कि बहुत कम ईसाई समझते हैं। जब परमेश्वर ने यूहन्ना 3, 16 में कहा, तो हम इस बात पर भी बहस करते हैं कि क्या यीशु ने यह कहा या यह लेखक का हिस्सा है, क्योंकि परमेश्वर ने इस काम से इतना प्यार किया कि उसने अपने इकलौते बेटे को दे दिया। वह प्रेम क्या है? खैर, वह प्रेम पुराने नियम में वापस चला जाता है।

तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखना, और केवल उसी की सेवा करना। तुम देखते हो, प्रेम पुराने नियम से लेकर नए नियम तक एक वाचा शब्द है। याकूब, मैंने उससे प्रेम किया है, और उसने भी उससे घृणा की है।

क्या यह व्यक्तिगत प्रेम और व्यक्तिगत दुश्मनी के बारे में बात कर रहा है? नहीं, यह वाचा के बारे में बात कर रहा है। याकूब, जितना भी बुरा था, वह एक प्लांटर था। वह एक चालाक आदमी था, लेकिन वाचा के अर्थ में, उसने कुछ चीजें पूरी तरह से सही कीं।

लेकिन एसाव ने ऐसा नहीं किया। एसाव की मानसिकता सही दिशा में नहीं थी, और परमेश्वर उससे घृणा करता था। और इसलिए, उस पाठ में जो प्रेम और घृणा है, वह वाचा की आज्ञाकारिता या वाचा की अवज्ञा, परमेश्वर के तरीकों का सम्मान करने के बारे में है।

प्रेम बाइबल में ईश्वर के बाद सबसे बड़े शब्दों में से एक है। मैंने कई साल पहले एक पेपर लिखा था। मैं मिडवेस्ट इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी का अध्यक्ष था।

यह अमेरिका में एक क्षेत्रीय समाज है, और हमने आध्यात्मिक गठन पर एक बैठक की थी। मैंने आध्यात्मिक गठन के नियम के रूप में प्रेम पर एक पेपर लिखा। पुराने नियम से लेकर नए नियम तक, मैंने कथा को देखा और संश्लेषित किया। अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करो।

अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। यीशु ने कहा कि ये सबसे बड़ी आज्ञाएँ हैं। इसलिए, प्रेम को सीढ़ी के शीर्ष पर होना चाहिए, और मैं आपको दिखाने जा रहा हूँ कि नया नियम भी इसे वहाँ कैसे रखता है।

इसलिए, जब हम इस बारे में बात करते हैं कि एक आस्तिक का मार्गदर्शन करने वाला सबसे बड़ा मूल्य क्या है, तो हम प्रेम के इस मुद्दे के बारे में बात कर रहे हैं। स्लाइड 13 वह जगह है जहाँ हम हैं। प्रेम।

ठीक है, अब आगे चलते हैं। सबसे बड़ा मूल्य क्या है? महान आज्ञा। प्रेम को परिभाषित किया गया है।

यहाँ आपके लिए एक परिभाषा है। यह परिभाषा कई साल पहले मेरे एक शिक्षक से आई थी जो अब मर चुके हैं, और यह मेरे साथ चिपक गई। मैंने विस्तार से बताया है, और आप इस पर विस्तार नहीं कर सकते, लेकिन यह यहाँ है।

प्यार दृढ़ संकल्प है। देखिए, प्यार पहली भावना नहीं है। हर कोई यह समझाने की कोशिश करता है कि अपने दुश्मनों से प्यार करने का क्या मतलब है।

खैर, आपको वहाँ पहुँचना ही होगा। प्रेम अच्छा करने का दृढ़ संकल्प है। ठीक है, इसका क्या मतलब है? अब आपके पास एक बड़ा काम है, है न? परिभाषित करें कि अच्छा क्या है।

प्रेम का अर्थ है प्रेम की वस्तु के प्रति अच्छाई, सबसे बड़ा संभव भला करने का दृढ़ संकल्प। इसलिए, आपको प्रेम को बाइबिल के शब्दों में परिभाषित करने में सक्षम होने के लिए अच्छाई को परिभाषित करना होगा। यदि आप प्रेम से कार्य करने जा रहे हैं, तो आपको यह समझना होगा कि इसका क्या अर्थ है।

सतही तौर पर परवाह करना प्रेम की अनुपस्थिति हो सकती है। अगर आप मार्था की तरह इस तरह के काम करने के लिए प्रेरित हैं और मैरी ने जो मूल्यवान देखा उसे अनदेखा करते हैं, तो आप वास्तव में प्रेम नहीं कर रहे हैं। आप कुछ करने के लिए जुनूनी हैं, और यह सबसे अच्छा प्रेम नहीं हो सकता है।

कभी-कभी, प्यार करना मुश्किल होता है। कभी-कभी, प्यार ना कहता है। कभी-कभी, प्यार एक व्यक्ति को उसके हाल पर छोड़ देता है, और मैरी और मार्था यहाँ एक सातत्य के दो पहलू हैं।

मेरी की शायद कुछ लोगों द्वारा आलोचना की गई थी क्योंकि उसके पास वह अच्छा मूल्य था, और फिर भी मार्था वहाँ तक नहीं पहुँच सकी क्योंकि वह अन्य कामों में बहुत व्यस्त थी। इसलिए प्रेम अच्छाई करने का दृढ़ संकल्प है, प्रेम की वस्तु के प्रति सबसे बड़ा संभव अच्छाई। अपने शत्रुओं से प्रेम करें।

आप दुश्मन से कैसे प्यार करते हैं? आप उनकी भलाई के लिए योजना बनाते हैं। हो सकता है कि उन्हें यह अच्छा न लगे, और हो सकता है कि दूसरे भी इसे अच्छा न समझें, लेकिन अच्छाई प्रेम के कार्यों को निर्धारित करती है। इसलिए प्रेम को परिभाषित किया जाता है।

चलिए आगे बढ़ते हैं। प्रेम की आज्ञा एक क्रिया है। प्रेम वह है जिसे हम मौखिक संज्ञा कहते हैं।

यह एक क्रिया शब्द है। लेकिन प्रेम कोई भावना नहीं है। जब मैं कहता हूँ कि यह भावना नहीं है, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि भावनाएँ प्रेम की श्रेणी से रहित हैं।

मैं बस इतना कह रहा हूँ कि प्रेम एक वस्तु सिद्धांत के रूप में भावना पर आधारित नहीं है। भावनाएँ हमेशा हमें प्रभावित करती हैं, कभी-कभी बेहतर के लिए। लेकिन सच तो यह है कि प्रेम एक विकल्प है।

प्रलोभन के सामने भी विवाह में वफ़ादार बने रहना, अच्छा करने का चुनाव है, अपनी भावनाओं के आगे न झुकना। और हो सकता है कि आपको अपने विवाह में परेशानी हो रही हो, और शायद आप कहें, वह व्यक्ति मुझसे प्यार नहीं करता। मेरी पत्नी मुझसे प्यार नहीं करती।

और आप पलटकर गलत काम चुन लेते हैं। हाँ, इसके लिए कोई बहाना नहीं है। यह एक बुरा मूल्य है, एक बुरा विश्वदृष्टिकोण है।

यह ईश्वर के मूल्यों का पालन करने के बजाय उनके साथ छेड़छाड़ है। प्रेम की आज्ञा एक क्रिया है। यह एक वाचा निष्ठा है।

भगवान ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उन्होंने अपना इकलौता बेटा दे दिया। यह एक चुनाव है। यह कोई भावना नहीं है।

नहीं, परमेश्वर में भावनाएँ हैं। और वह अपनी योजना से प्रसन्न था। लेकिन सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने बलिदान के द्वारा प्रेम करने का चुनाव किया।

अपने दुश्मनों से प्यार करो। यह कोई भावनात्मक आदेश नहीं है। इसमें यह नहीं कहा गया है कि हिटलर से प्यार करो, सद्दाम हुसैन से प्यार करो, दुनिया के कुछ ऐसे लोगों से प्यार करो जिन्होंने लोगों के लिए इतना दर्द पैदा किया है कि हमें तब पता चलता है जब राष्ट्र आज़ाद होते हैं, जैसे कि वर्तमान में सीरिया में।

और इसलिए, परिणामस्वरूप, अपने शत्रुओं से प्रेम करना इस बात से परिभाषित होना चाहिए कि इसका क्या अर्थ है। इसका अर्थ है भलाई करना। और यह आपकी अपेक्षा से कुछ अलग हो सकता है।

प्रेम विश्वदृष्टि और मूल्यों द्वारा निर्देशित होता है। यह अपने आप में कोई इकाई नहीं है। यह इन विश्वदृष्टि और मूल्यों और इसके सभी कार्यों द्वारा निर्देशित होता है।

यह ईश्वर की इच्छा है। आप प्रेम करते हैं, लेकिन आपका प्रेम उस विश्वदृष्टि और मूल्यों के संबंध में परिभाषित होता है जिन्हें आप पहचानते और लागू करते हैं। प्रेम नियंत्रित करता है।

हम अभी आत्मा की स्वतंत्रता के बारे में बात करने जा रहे हैं। और गलातियों 5 और 2 पतरस में, मेरे पास कुछ चार्ट हैं जो मुझे लगता है कि इसे आपके सामने बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत करते हैं। और अब हम वहाँ जाएँगे।

ठीक है। गलातियों 5 और 6. और आपको उस पूरे संदर्भ को पढ़ने की ज़रूरत है। और अगर आप ऐसा करेंगे, तो मैं आपकी सराहना करूँगा कि आप ऐसा करें और इसे अपने कंप्यूटर दिमाग में डालें।

आप जानते हैं क्यों। लेकिन गलातियों 5 और 6 में, हमारे पास अध्याय 5 में आत्मा के फल के बारे में वह प्रसिद्ध अंश है। लेकिन आत्मा के उस फल का संदर्भ क्या है? आइए इस पर थोड़ा और गौर करें। गलातियों की किताब बहुत छोटी है।

मेरे पत्रे अलग-अलग कर दो। ठीक है। गलातियों 5 और 6। इसे देखो।

यह सैंडविच होगा। शायद आपको भूख लगी हो। तो यह रहा आपका सैंडविच।

रोटी का सबसे ऊपरी टुकड़ा। परमेश्वर के नियम को पूरा करो। बाइबल गलातियों 5:13 से 15 में कहती है।

इसे देखो। 5:13. समझो, मुझे यहाँ ध्यान केन्द्रित करना है।

मेरी आँखें सचमुच बहुत बढ़िया हैं, क्योंकि भाइयों और बहनों, तुम्हें आज्ञादी के लिए बुलाया गया है। मैंने यह भी कहा।

बस अपनी आज्ञादी का इस्तेमाल शरीर के लिए अवसर के रूप में न करें। शरीर संसार का प्रतिनिधि है। लेकिन प्रेम के ज़रिए क्या करें? एक दूसरे की सेवा करें।

क्योंकि सारी व्यवस्था एक ही बात में पूरी हो गई, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। परन्तु यदि तू काटता और फाड़ता है, तो प्रेम नहीं रखता।

एक मिनट रुको। दूसरा क्या है? यह उस महान आदेश का केवल आधा हिस्सा है। और यह दूसरा आधा हिस्सा है।

इसमें यह नहीं कहा गया है कि परमेश्वर से प्रेम करो, अपने पड़ोसी से प्रेम करो। यह मेरे मित्रों से है। पॉल लोगों के साथ प्रेम के क्षैतिज मुद्दे पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

परमेश्वर के प्रेम को पूरा करें। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें। वह आध्यात्मिक होकर यह न कहे कि तुम ऐसा इसलिए नहीं करते क्योंकि तुम परमेश्वर से प्रेम करते हो।

खैर, यह तो एक तरह से तय बात है, है न? लेकिन सच तो यह है कि हम इन ग्रंथों को बहुत ज़्यादा आध्यात्मिक बना देते हैं। और हम यह नहीं पहचान पाते कि पाठ में क्या है और क्या नहीं। इस पाठ में दो महान आज्ञाओं में से पहली आज्ञा का ज़िक्र नहीं किया गया है।

यह दूसरे पर बुलाया गया क्योंकि यही संदर्भ है। ठीक है, चलो आगे बढ़ते हैं। रोटी का निचला टुकड़ा मसीह के नियम को पूरा करना है।

अध्याय छह में, एक से पांच तक रोटी का दूसरा टुकड़ा है। अध्याय पांच और छह में ये संतुलित कथन हैं। श्लोक दो, एक दूसरे का बोझ उठाओ और इस तरह मसीह के नियम को पूरा करो।

अध्याय पाँच प्रेम के नियम को पूरा करता है, जो मोज़ेक है। यह अभी भी लागू होता है, है न? अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। लेकिन अब दूसरा पहलू यह है कि उनसे प्रेम करो, एक दूसरे का बोझ उठाना प्रेम की अभिव्यक्ति है।

मसीह के नियम को पूरा करो। व्यवस्था का उल्लेख अध्याय पाँच में किया गया था, और व्यवस्था का उल्लेख अब अध्याय छह में किया गया है। और इस प्रकार, आप अपने पड़ोसी से प्रेम करके और एक दूसरे का बोझ उठाकर मसीह के नियम को पूरा करते हैं।

और यह सब चर्च के संदर्भ में है क्योंकि आत्मा का फल कोई निजी सूची नहीं है। यह चर्च के कामकाज की सूची है। यह एक कार्य सूची है।

यह एक सद्गुण सूची है। शरीर के काम, इस तरह से चर्च को काम नहीं करना चाहिए। आत्मा के फल से चर्च को काम करना चाहिए।

ईमानदारी से कहूँ तो यह एक ऐसी सूची है जिसका पालन करना ज़रूरी है। अपने पड़ोसी से नफरत करने और उससे प्यार करने, शरीर के कामों और आत्मा के फल की व्याख्या गलातियों पाँच और 6 में की गई है। और उस व्याख्या का शीर्षक है प्यार करना।

तो, प्रेम ही वास्तव में शरीर और आत्मा की इस पूरी स्थिति को प्रबंधित करता है। और जब यह आत्मा के फलों की बात करता है, तो यह आत्मा के बारे में बात कर रहा है जो परमेश्वर के लिए कार्य करने का क्षेत्र है। मैं कुछ मुद्दों पर नहीं जाना चाहता, जिन पर मैं बाद में चर्चा करूँगा, इसलिए मैं इसे अभी छोड़ देता हूँ।

यहाँ एक और है। यह 2 पतरस अध्याय एक है। यह मेरी पसंदीदा पुस्तकों में से एक है।

यह बाइबल की कलात्मकता को दर्शाता है। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो 2 पतरस का अध्याय एक पढ़िए।

हम वहाँ एक साथ घूमेंगे। इब्रानियों की पुस्तक के ठीक बाद। पहला पतरस, याकूब, 2 पतरस अध्याय एक।

यह एक आकर्षक पाठ है, और मैं आपको दिखाऊंगा कि यह कितना आकर्षक है। और हम यहाँ, विशेष रूप से 2 पतरस अध्याय एक और पद तीन को देख रहे हैं। काश मैं आपको यह भाषा, यह दिव्य शक्ति, और इस तरह की सभी चीजें समझा पाता।

हम इसे धार्मिक भाषा कहते हैं, लेकिन इसे खोलना होगा। यह स्वयं-स्पष्ट नहीं है। इसे समझने के लिए आपको थोड़ी जांच करनी होगी।

उसकी दिव्य सामर्थ्य ने हमें जीवन और भक्ति से संबंधित सभी चीजें किसके द्वारा दी हैं? उसके ज्ञान के द्वारा। पद तीन। उसका ज्ञान जिसने हमें अपनी महिमा और श्रेष्ठता के लिए बुलाया है।

उत्कृष्टता शब्द सद्गुण के लिए शब्द है। उसने हमें अपनी महिमा और सद्गुण के लिए बुलाया है। यही मसीह की महिमा और सद्गुण है।

यदि आप चाहें तो उनकी नैतिक उत्कृष्टता। वैसे, इस तरह से हम एक लंबे वाक्य में हैं, जिसके द्वारा उन्होंने हमें अपने अनमोल और बहुत महान वादे दिए हैं ताकि उनके माध्यम से, उन वादों को पूरा करके, आप दिव्य प्रकृति के भागीदार बन सकें। वर्ग, प्रकृति एक ऑन्टोलॉजिकल इकाई नहीं है।

प्रकृति विशेषताओं का एक समूह है। उदाहरण के लिए, ईश्वरीय प्रकृति आत्मा के फल में परिलक्षित होती है, और यह इस सूची में जो कुछ भी वह हमें बताता है, उसमें भी परिलक्षित होने जा रही है। ईश्वरीय प्रकृति, विशेषताओं का एक संयोजन, पापपूर्ण इच्छा के कारण दुनिया में व्याप्त भ्रष्टाचार से बचकर, उन्हें अपनी सूची मिल गई।

यह हमारी सूची में नहीं है। इस कारण से, अपने विश्वास को सद्गुणों से परिपूर्ण करने का हर संभव प्रयास करें। क्या आठवीं आयत का पहला भाग वहाँ है, और क्या यह छठी आयत है? नहीं, यह छठी आयत है।

माफ़ करें, मेरा चश्मा। दरअसल, यह पाँचवीं कविता है। हर संभव प्रयास करें।

यह ग्रीक पाठ में एक शब्द है जिसका अर्थ है वास्तव में कड़ी मेहनत करना। यह एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल नाटकों और स्थानों में किया जाता था जहाँ वे समुदाय के लिए दान और चीजें

देकर नाटक को समुदाय की भलाई के लिए आयोजित कर सकते थे। यह यहाँ हमें आपूर्ति करने और उस पर काम करने के लिए कहता है।

इस पर मेरा उपदेश है। इसे विजयी ईसाई जीवन, नैतिक पसीना कहा जाता है। और मैं इसे इस वाक्यांश से लेता हूँ: बिना किसी परवाह के आपूर्ति करें।

अपने विश्वास को सद्गुणों से परिपूर्ण करने का हर संभव प्रयास करें। अब, आइए देखें कि यह कैसे काम करता है। लागत की परवाह किए बिना आपूर्ति करें।

यही वह है जो संरक्षकों ने उन नाटकों और समुदाय के लिए किया। और यही वह है जो हमें उन सद्गुणों के संबंध में करना चाहिए जो हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। सद्गुण वह शब्द है जो इस सूची में सबसे ऊपर है।

यह एक बहुत ही अच्छी तरह से तैयार की गई सूची है, और मेरा चार्ट आपके लिए खोल देता है। सद्गुण इस सूची में सबसे ऊपर है। आप सद्गुण कैसे प्रदान करते हैं? विश्वास के द्वारा।

विश्वास के बिना, परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है। अब, परमेश्वर का वचन, रोमियों में, इस तथ्य के बारे में बात करता है कि विश्वास के द्वारा, हम इन बातों पर विश्वास करते हैं, और हम ये काम करते हैं। प्रत्येक गुण, और वह हमें गुणों की एक सूची देने जा रहा है।

इसे हम सद्गुण सूची कहते हैं। आस्था से सद्गुण, प्रत्येक सद्गुण अगले सद्गुण के निर्माण का साधन बन जाता है। अब देखिए यह कैसे काम करता है।

अगर हम पाठ पढ़ रहे होते, तो हम सीधे पढ़ते रहते, लेकिन मैंने इसे इस तरह से खींचा है कि आप इसे देख सकें। ठीक है। आप क्या करते हैं? आप विश्वास के द्वारा सद्गुण प्रदान करते हैं।

आप आपूर्ति करते हैं, और ये सभी एक ही क्रिया पर आधारित हैं: लागत की परवाह किए बिना आपूर्ति करना, वैसे, गुण के आधार पर ज्ञान की आपूर्ति करना। वाह, यह एक दिलचस्प बात है। आपको इन शब्दों की परस्पर क्रिया के बारे में बहुत सोचना होगा।

ज्ञान कहाँ से आता है? खैर, कुछ हद तक, सद्गुण इसमें शामिल है। दूसरे शब्दों में, हमारे मूल्य हमें ज्ञान की ओर ले जाते हैं। हम अंधे हो सकते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उसका पालन करने के तरीके में बहुत सद्गुणी नहीं हैं।

इसके अलावा, ज्ञान आत्म-नियंत्रण प्रदान करता है। अब, देखें कि इस चार्ट में क्या हो रहा है। मेरे पास एक छोटा सा पॉइंटर था जिसका मैं इस्तेमाल करना पसंद करता था, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैंने इसके साथ क्या किया।

ठीक है। सद्गुण मूल रूप से क्रिया की आपूर्ति, सद्गुण की आपूर्ति का उद्देश्य है। फिर, हमारे पास ये सभी पूर्वसर्ग वाक्यांश हैं: साधन या एजेंसी। इनका वर्णन करने के विभिन्न तरीके हैं।

आप पुण्य कैसे प्राप्त करते हैं? विश्वास से। खैर, यहाँ विश्वास कोई अनाज नहीं है। और फिर ज्ञान की आपूर्ति करें, क्रिया, वस्तुएँ, ज्ञान की आपूर्ति करें।

आपको ज्ञान कैसे मिलता है? पुण्य से। ओह, यहाँ पर। आपको ज्ञान मिलता है, और आपको पुण्य मिलता है, फिर आपको पुण्य के कारण ज्ञान मिलता है।

आप आत्म-नियंत्रण कैसे प्रदान करते हैं? आप आत्म-नियंत्रण कैसे प्रदान करते हैं? ज्ञान के द्वारा। क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? यदि आपका स्वभाव खराब है, तो इसका कारण यह है कि आपमें आत्म-नियंत्रण की कमी है। और यदि आपमें आत्म-नियंत्रण की कमी है, तो इसका कारण यह है कि आपमें ज्ञान की कमी है।

और अगर आपके पास ज्ञान की कमी है, तो आपके पास सद्गुण की कमी है। यार, यह उपदेश है, है न? यह बहुत दूर तक जाता है। चलिए यहाँ चलते हैं।

आप आत्म-नियंत्रण द्वारा धैर्यवान सहनशीलता प्राप्त करते हैं। धैर्यवान सहनशीलता शब्द का सबसे अच्छा अनुवाद धैर्यवान सहनशीलता है क्योंकि यह धैर्यवानों का अभ्यास है। लेकिन आप धैर्यवान सहनशीलता कैसे प्राप्त करते हैं? आत्म-नियंत्रण द्वारा।

आप आत्म-नियंत्रण कैसे प्राप्त करते हैं? ज्ञान के द्वारा। तो, जो व्यक्ति खुद को नहीं जानता वह मुसीबत में है क्योंकि आप भोलेपन के कारण चक्र को पूरा नहीं कर सकते। मैं दूसरे शब्दों का उपयोग कर सकता हूँ।

आत्म-नियंत्रण के लिए आपको खुद को जानना होगा। आपके पास ज्ञान हो सकता है। और उस ज्ञान का इन सभी दूसरी चीज़ों से संबंध होना चाहिए।

और फिर, अगर आप धैर्य रखने जा रहे हैं, तो आप आत्म-नियंत्रण रखने जा रहे हैं। मैं स्वभाव से बहुत धैर्यवान व्यक्ति नहीं हूँ। मैं, आप जानते हैं, मैं नहीं, मैं काम पूरा करना चाहता हूँ।

मैं हर काम सही तरीके से करना चाहता हूँ। और मैं अज्ञानता के साथ बहुत धैर्यवान नहीं हूँ। मुझे बस यह स्वीकार करना है।

और मैं ऐसे व्यक्ति के साथ बहुत धैर्य रख सकता हूँ जो नहीं जानता। और यह जरूरी नहीं कि यह उनकी गलती हो। दूसरे शब्दों में, उन्हें जानने का अवसर ही नहीं मिला।

यार, मैं दिन भर धैर्य रख सकता हूँ। लेकिन अगर आप मुझे कोई ऐसा व्यक्ति दें जिसे पता होना चाहिए, और जिसे जानने का समय मिला है, और जिसे जानने का प्रशिक्षण मिला है, और फिर भी वह नहीं जानता। मैं बहुत धैर्यवान नहीं हूँ।

खैर, यीशु भी नहीं थे। अच्छा, भगवान का शुक्र है। आप इसराइल में एक नेता हैं।

तुम्हें ये बातें नहीं पता। चलो। ठीक है।

आत्म-संयम द्वारा धैर्यपूर्वक सहनशीलता। इसके अलावा, आपके पास ईश्वरीयता होनी चाहिए। खैर, आप ईश्वरीयता कैसे प्राप्त करते हैं? आप इसे धैर्यपूर्वक सहनशीलता से प्राप्त करते हैं।

अगर आप जल्दी में हैं तो आप ईश्वरीय नहीं हो सकते। अगर अधीरता आपके जीवन पर हावी है। यह मेरे जीवन पर हावी नहीं है।

और मैं कभी-कभी ईश्वरीय नहीं होता क्योंकि मैं अधीर होता हूँ। और मैं कबूल नहीं करने वाला। आप खुद से कबूल करते हैं, मैं खुद से कबूल करता हूँ।

ठीक है। धैर्यपूर्वक सहनशीलता द्वारा ईश्वरीय भक्ति। भाईचारे का प्रेम।

भाईचारे का प्यार कैसे पाया जाता है? भक्ति के द्वारा। आप भक्ति के बिना भाईचारे का प्यार नहीं दिखा सकते। 1 यूहन्ना पढ़ें।

भाईचारे के प्रेम के संबंध में ईश्वरीय होने का क्या अर्थ है, इस पर आपका व्याख्यान है। इसे देखिए। आप शिल्पकला के बारे में बात करते हैं।

यार, तुम बैठो और कुछ ऐसा सोचो। यह पीटर ने बनाया है। तुम्हें लगता है कि पीटर एक मूर्ख मछुआरा था? तुम्हारी जान पर भी नहीं।

सद्गुण ही वस्तु है। ज्ञान ही वस्तु है। आत्म-नियंत्रण ही वस्तु है।

धैर्यपूर्ण सहनशीलता ही उद्देश्य है। ईश्वरीय भक्ति ही उद्देश्य है। भाईचारे का प्रेम ही आपूर्ति का उद्देश्य है।

और ये सभी पूर्वसर्गीय वाक्यांश आपको बता रहे हैं कि यह कैसे करना है। और सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। अब, एक सेकंड के लिए अनुमान लगाएँ।

आप जानते हैं, लेकिन अंदाज़ा लगाइए कि इस सूची का ताज क्या है। प्यार। कभी-कभी, प्यार किसी सूची में सबसे पहले आता है।

कभी-कभी, यह सबसे अंत में आता है क्योंकि सभी सूचियों में किसी न किसी तरह की योजना होती है। सभी नहीं, लेकिन बहुत सी।

यह सबसे बड़ी योजना है जो मैंने किसी भी परीक्षण में पाई है, यह सूची है। क्रिया, प्रत्यक्ष वस्तुएँ, पूर्वसर्ग वाक्यांश, प्रत्येक गुण अगले का साधन है। और आपको पूरा भोजन सौदा मिल गया।

आप इस पर आधा सैंडविच ऑर्डर नहीं कर सकते। आपको पूरा खाना चाहिए। अगर आप प्यार करने जा रहे हैं, तो इसकी शुरुआत सद्गुण और ज्ञान, आत्म-नियंत्रण, धैर्य, सहनशीलता, ईश्वरीयता और भाईचारे के प्यार से होती है ताकि आप रानी तक पहुँच सकें।

प्रेम की रानी। और यह कोई भावनात्मक चक्र नहीं है। यह ज्ञान का चक्र है।

यह एक सद्गुण चक्र है। सद्गुण ही ज्ञान है। शास्त्रों के अनुसार प्रेम भी सबसे बड़ा सद्गुण है।

और तो, वाह। मुझे यह चीज़ बहुत पसंद है। मुझे उम्मीद है कि आप भी इससे लाभ उठा सकेंगे।

और आप इसका इस्तेमाल करने के लिए स्वतंत्र हैं। मुझे नहीं पता कि आपको ये आखिर में कैसे मिलेंगे, क्या आपको पीडीएफ़ मिलेंगे या पावरपॉइंट मिलेगा। अगर आप मुझे ईमेल करना चाहते हैं, अगर आपको पावरपॉइंट नहीं मिलता है और आप मुझे ईमेल करना चाहते हैं, तो मैं हमेशा आपको इसे भेजूंगा।

मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। मैं हमेशा यहाँ नहीं रहूँगा। मुझे इसे साझा करके खुशी होगी।

वैसे तो यह एक बहुत बढ़िया उपदेश है, लेकिन इसे समझने के लिए आपको थोड़ा होमवर्क करना होगा। अब, इस बात पर विचार करें कि कैसे पौलुस और पतरस ने आत्मा के माध्यम से मानव समुदाय में निर्णय लेने के लिए सद्गुण और दोष-रहित विनियमन किया।

खैर, समुदाय में अच्छे रिश्ते भगवान की इच्छा है। मुझे कहना चाहिए कि समुदाय में रिश्ते भगवान की इच्छा है। क्या आप सचेत रूप से इस अपेक्षा का पालन करते हैं? अब, यह इस अर्थ में एकरस नहीं है कि इसे करने का केवल एक ही तरीका है।

और इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई इस मामले में एक जैसा है। मैं इस व्यक्ति के साथ इस तरह से व्यवहार कर सकता हूँ क्योंकि वह जीवन में इसी स्थिति में है। मैं इस व्यक्ति के साथ ज्यादा सीधे तौर पर व्यवहार कर सकता हूँ क्योंकि वह जीवन में इसी स्थिति में है।

इसलिए, समुदाय में अच्छे संबंधों के बारे में लगातार निर्णय लिए जा रहे हैं। हालाँकि, एक समुदाय को खुद के बारे में जागरूक होना चाहिए। आत्म-जागरूकता के बिना, आप समुदाय में प्रगति नहीं कर सकते क्योंकि आप खुद में प्रगति नहीं कर सकते।

यदि आप अपने विश्वदृष्टिकोण और अपने मूल्यों को नहीं समझते हैं तो आप निर्णय लेने में प्रगति नहीं कर सकते। 2 पतरस, प्रेम का चक्र, जैसा कि मैं इसे यहाँ कहता हूँ। ईसाई जीवन एक सद्गुण-संचालित जीवन है।

मुझे यह वाक्य पसंद है। एक किताब थी जिसका नाम था द पर्पज-ड्रिवन लाइफ़। सच कहूँ तो उस किताब की लाखों प्रतियाँ भोले-भाले ईसाइयों को बेची गईं।

और इस पुस्तक से कुछ अच्छा हासिल किया जा सकता है। लेकिन सच कहूँ तो पुस्तक ने इसे पूरा नहीं किया। नए नियम में उद्देश्य बहुत बड़ा है।

उद्देश्य संबंधी सभी तरह के प्रावधान हैं। और हाँ, ईसाई होने के नाते हमारे पास उद्देश्य होना चाहिए। मैं इससे सहमत हूँ।

लेकिन यह वह चीज नहीं है जो हमें प्रेरित करती है। सद्गुण हमें प्रेरित करते हैं। मसीही जीवन सद्गुण से प्रेरित जीवन है।

आप इन गुणों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, लेकिन मैं आपको याद दिला दूँ कि मैंने उनके बारे में ज़्यादा बात नहीं की। आत्मा के फल और शरीर के कामों को निजी नहीं बनाया गया है। दूसरे शब्दों में, बहुत सारे कैलेंडर हैं जो आत्मा के फल को कैलेंडर पर रखते हैं।

और ओह, आज मैं बहुत दयालु महसूस कर रहा हूँ। इस तरह की बात। अच्छा, यह अच्छी बात है।

लेकिन वे एक समुदाय को दिए जाते हैं। वे एक चर्च को दिए जाते हैं। एक अच्छा चर्च उन गुणों से संचालित होता है जो आत्मा के फल में हैं, सचेत रूप से ऐसा करते हुए, जानबूझकर ऐसा करते हुए।

और एक बुरा चर्च शरीर के कामों से काम करता है, अगर वह चर्च है भी। क्योंकि यह अच्छे होने के अर्थ के बिलकुल विपरीत है, और इसलिए इन चीजों पर काम करें।

इन चीज़ों के बारे में सोचिए। गहराई से सोचिए। गहराई से सोचिए कि ये लेखक किस तरह से हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली को आकार दे रहे हैं।

इसके अलावा, स्लाइड 19 पर, मुझे एक, ओह, यह मुसीबत का समय है। मुझे पता है कि यह है। स्लाइड 19, मूल्यों के स्तर।

आप जानते हैं क्या? मुझे वही करना होगा जो मैंने दूसरे व्याख्यान में किया था। मुझे इसे विभाजित करना होगा क्योंकि मैं इस व्याख्यान में जो कुछ भी आने वाला है उसे कम नहीं कर सकता। इसलिए मैं इसे A और B में विभाजित करने जा रहा हूँ। और B भाग यहाँ मूल्यों के स्तरों से शुरू होगा।

इस सत्र में हम जीएम सत्र में हैं। मैं आपको फिर से नंबर दूंगा। मुझे इसे खुद याद रखना पड़ा।

जीएम 8. इसमें ए और बी होगा, जैसा कि हमने पुराने नियम के साथ किया था। और मुझे मूल्यों और बाइबिल के आदेशों के इन स्तरों पर वापस आना होगा और अगले सत्र में वहां से शुरू करना होगा क्योंकि यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि मैं इसे जल्दी से जल्दी खत्म कर सकूँ। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि आप देख रहे होंगे कि हम जो बार-बार दोहरा रहे हैं, वह अब थोड़ा-थोड़ा खुलने लगा है।

इसलिए, अगर आप दृढ़ रहें, तो आपको पुरस्कृत किया जाएगा। अगर आप शुरुआती व्याख्यानों में मुझसे थक जाते हैं और आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो इस तरह से थक गया है, तो उसे प्रोत्साहित करने का प्रयास करें। अगर आप उसके साथ बने रहेंगे, तो वह आपकी ज़रूरत के हिसाब से आगे बढ़ेगा।

तो, फिर से धन्यवाद। भगवान आपको आज के दिन के लिए आशीर्वाद दें। और हम आपको हमारे अगले व्याख्यान में देखेंगे, जो GM 8 में होगा। हम इसे दो व्याख्यानो में विभाजित करेंगे।

आपके पास पहले से ही नोट्स हैं। और वे उन्हें इस तरह से अलग करते हैं। हम उन्हें वीडियो से अलग कर देंगे।

आपका दिन शुभ हो।